अपन को आत्मा समझ बैठे हो; क्योंकि बाप ने समझाया है देह विनाशी है। आत्मा अविनाशी है जो शरीर बदलती है। तो शरीर के नाम बदलते हैं। इस समय आत्माओं का बाप आया हुआ है। जीवात्माएँ बुलाती परमपिता परमात्मा को। अभी सभी आत्माओं का बाप एक ही है वह है परमपिता। यह है ज्ञान। बाकी सभी जगह है भक्ति। सतयुग और त्रेता को कहा जाता है सुखधाम। दुख का नाम नहीं। द्वापर–कलियुग है रावण राज्य। सभी पतित बनते हैं। रावण राज्य में दुख ही दुख है। लड़ाई–झगड़े आदि हैं ना। सतयुग है ही सुखधाम। यह ड्रामा है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी रिपीट होती है। नई दुनिया को कहा जाता है सतयुग गोल्डन एज। पुरानी दुनिया को कहा जाता है कलियुगी आयरन एज। इस दुनिया यानी कल्प की आयु 5000 वर्ष है। शास्त्रों में कुछ भी लिखा हुआ नहीं है। उनमें लाखों वर्ष लिख दिए हैं। भक्ति है दुर्गति। इनको कहा जाता है ब्रह्मा सो ब्राह्मणों की रात। फिर ब्राह्मणों का दिन सतयुग–त्रेता। नई दुनिया में जरूर स्वर्ग है। उनको हेविन बहिश्त कहा जाता है। वहाँ विकार होता ही नहीं। योगबल से पैदाइश होती है। रावण राज्य है नहीं तो विकार का प्रश्न ही नहीं उठता। तुम पहले–2 सृष्टि में आते हो तो एक धर्म है स्वर्ग है। वहाँ हैं सभी निर्विकारी। देवताओं की महिमा गाते हैं ना सर्वगुण सम्पन्न..... काम विकार को कहा ही जाता है हिंसा। सतयुग में विकार होता ही नहीं। उनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। इस समय है सम्पूर्ण विकारी। अभी है संगम। कलियुग खत्म हो सतयुग की स्थापना होगी। सतयुग था तो एक ही डीटी धर्म था। उनको 5000 वर्ष हुए। 1250 वर्ष सूर्यवंशी, 1250 वर्ष चन्द्रवंशी.....यह बाप ही समझाते हैं। वही नॉलेजफुल है ना। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। इसमें डीटिज्म इस्लामीज्म, बौद्धिज्म.....हैं। पहले एक धर्म फिर वृद्धि होते जाते हैं। और ..... आते हैं तो एक देवी–देवता धर्म प्रायः गुम हो जाता है। सुख और दुख, हार और जीत का खेल है। अभी तुम रावण पर जीत पहनते हो। यह है विकारी दुनिया। सतयुग को कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। यह बातें दुनिया नहीं जानते। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूँ कलियुग के संगम पर और ..... में युग2 लिख दिया है। अच्छा चार युग हैं तो चार अवतार हुए। यह भी तब कहते थे जबकि भक्ति रजोगुणी थी। फिर जब तमोप्रधान बनते हैं तो 24 अवतार.....कह देते। कच्छ–मच्छ अवतार, बराह अवतार। गालियाँ देते रहते। अभी तो कहते हैं हरेक में भगवान है। 84 लाख योनियों में भगवान है। फिर कह देते ठिक्कर–भित्तर, कण–कण में परमात्मा है। अरे, कहाँ लिखा हुआ है? कहते हैं गीता में। परमात्मा कहते हैं मैं तो आता ही एक बार हूँ जबकि कलियुग को सतयुग, पुरानी पतित दुनिया को नई पावन दुनिया बनाना है। मैं युगे–2 तो आता नहीं हूँ। यह भी गीता ही है; परन्तु नाम बदल लिया है। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। मैं जानता हूँ। इनके 84 जन्म के अन्त में जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तब मैं प्रवेश करता हूँ। बाबा को कहा ही जाता है नॉलेजफुल। वह सभी आत्माओं का बाप है ना। कहते भी हैं सभी ब्रदर्स हैं। आजकल फिर कह देते सभी बाप हैं। ईश्वर ही ईश्वर है। बाप कहते नहीं। सभी ब्रदर्स आत्माएँ ब्रदर्स हैं। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ। बाप से वरसा मिलता है। वह हद ..... बाप, मैं हूँ बेहद का बाप। बच्चों को बाप से हद का वरसा मिलेगा। मैं हूँ बेहद का बाप। मैं सर्व की सद्गति करता हूँ। यह पुरानी दुनिया है ना। भारत में इनका राज्य था। तो यह विलायत वाले इस्लामी, बौद्धी,(क्रिश्चि)चयन्स आदि थे नहीं। एक धर्म था। यह ड्रामा का राज़ बाप ही समझाते हैं। वही चैतन्य बीजरूप है। इसलिए उनमें सारी झाड़ की नॉलेज है। कहते हैं मुझे सभी बुलाते हैं हे परमपिता। नजर ऊपर जाती है। नीचे नजर नहीं जावेगा; क्योंकि इस झाड़ का बीज ऊपर है और झाड़ों का बीज नीचे होता है। जब सतोप्रधान नया झाड़ था तो देवताएँ कितने शोभनिक फर्स्ट क्लास थे। फिर इस्लामी आते हैं। वैराइटी देखो कितनी है। चीज़ कैसी है। भिन्न–2 वैराइटी फीचर्स वाले मनुष्य हैं। इस समय है 500 करोड़। एक के फीचर्स न मिले

दूसरे से। हरेक की चाल–चलन अपनी है। यह सभी एक्टर्स हैं। हरेक को अपना पार्ट बजाना है। यह झाड़ को समझाना चाहिए। सतयुग में और धर्म वाले आ नहीं सकेंगे। ड्रामा बना बनाया है ना। हूबहू वही फिर एक्युरेट रिपीट होगी। यह चक्र हूबहू फिरता ही रहता है। कलियुग में अनेक मनुष्य। सतयुग में हैं थोड़े बाकी सभी मनुष्य चले जावेंगे। यह बातें मनुष्य कोई नहीं जानते। यह भी बहुत शास्त्र आदि पढ़ा। यह भी मनुष्य है। यह रूहानी बाप रूहानी बच्चों को सुनाते हैं। आत्मा ही सभी कुछ करती है ना। आत्मा निकल जाती है तो शरीर रहता ही नहीं। आत्मा जाकर दूसरा जन्म लेती है। शिवबाबा जन्म–मरण में नहीं आते हैं। वह है पुनर्जन्म रहित। अच्छा आवे कैसे? राजयोग सिखाने, पावन बनाने जरूर आना पड़े ना। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूँ। मैं एक सभी का फादर हूँ। वह फिर कह देते सभी फादर ही फादर हैं। फादर से वरसा मिल सकता है। भाई–2 को वरसा दे नहीं सकते। मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम्हारी एमऑबजेक्ट भी यह है। जानते हो भारत कितना माला–माल था। सॉलवेन्ट था। अभी इनसॉलवेन्ट है। भारत वर्थ नॉट ए पैनी है। पहले–2 वर्थ पाउन्ड था। सोने के महल थे। भक्तिमार्ग में मंदिर बनाया है। सोमनाथ के मंदिर में कितना अकीचार धन था जो ले गये। कितना कंगाल अभी बन गया है। यह खेल है ना। सभी एक्टर्स हैं। भारतवासियों के ही 84 जन्म हैं। क्रिश्चियन आते ही देरी से हैं तो उनके जन्म भी कम। सभी 84 जन्म नहीं लेंगे। मैक्सीमम है 84 मिनिमम है एक। सतयुग आदि में कितने थोड़े मनुष्य हैं। इसमें बुद्धि चाहिए। बाप आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं। ताला लगने से पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। विकारी पतित बन जाते हैं। विकारी पतित बन जाते हैं। पावन देवताएँ थे निर्विकारी। दैवीगुण वाले थे। फिर रावण राज्य में देवताएँ पतित बन जाते हैं। फिर अपन को हिन्दू कह देते। हिन्दू धर्म तो ..... नहीं। देवताएँ थे पवित्र। अभी अपवित्र होने कारण अपन को देवी–देवता नहीं कह सकते। इसको कहा जाता है कर्म भ्रष्ट धर्म भ्रष्ट। वहाँ कर्म अकर्म, यहाँ कर्म विकर्म हो जाते हैं। वह है श्रेष्ठाचारी दुनिया, अभी है भ्रष्टाचारी दुनिया। अब बाप कहते हैं काम महाशत्रु है इन पर जीत पहन जगत जीत बनो। यह पुरानी दुनिया अभी खत्म होनी है। हर 5000 वर्ष बाद पुरानी दुनिया खत्म जरूर होती है। नेचरल कैलेमिटीज भी आवेंगे और बम्स तो इतने में खलास कर देगी। विलायत में जो जहाँ होंगे वहाँ ही खलास हो जावेंगे। इतने सभी खलास होंगे तो उनके लिए अर्थ क्वेक्स, मुसलधार बरसात आदि–2 नेचरल कैलेमिटिज से तुरन्त मौत हो जावेगा। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते। अभी तो 500 करोड़ हैं। आत्माएँ सभी ऊपर में रहती हैं। फिर वहाँ से आती हैं। तुम हो एडॉप्टेड चिल्ड्रन्स। इन द्वारा एडॉप्ट करते हैं इसलिए इनको कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। उनके ही मुखवंशावली यह ब्राह्मण। इस समय सर्वव्यापी 5 विकार हैं। उनके बदली फिर परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया है। बाप कहते हैं साधु–सन्त आदि सभी विकारी हैं। गंगा में स्नान करने जाते हैं वह पतित–पावन है क्या? पानी थोड़े ही पावन बनावेगा। पतित–पावन तो बाप है। कहते हैं इस जन्म में पवित्र बनो फिर यह दुनिया ही नहीं रहेगी। अभी तुम बाप से पढ़ रहे हो। बाप बाप भी है, टीचर भी है, सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का राज़ समझाते हैं जो और कोई समझा न सके। मनुष्य मनुष्य की सद्गति कर न सके। वह एक ही बाप टीचर भी है तो सद्गुरु भी है। सारी दुनिया को पढ़ाते भी हैं। सृष्टि का चक्र समझाते हैं फिर कहते हैं मैं तुम सभी को ले जाऊँगा। लेने आया हूँ। आत्माओं को ले जाऊँगा। बाकी शरीर खत्म हो जावेगा। बाकी है आठ वर्ष। आगे भी तो .... विनाश हुआ था ना। सिर्फ एक ही धर्म था सतयुग में। और कोई धर्म न था। अभी सागर को सुखाया है फिर सागर सब(को) खलास कर देगा। पानी के नीचे आ जावेंगे। सतयुग में सिर्फ एक भारत ही रहता है। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

" हेलो सर्व सेन्टर निवास ब्राह्माकुल भूषणों प्रति हम सभी मधुबन निवासियों का मधुबन फुलवारी से प्यारे बापदादा सहित मधुर हार्दिक सुरनेह सम्पन्न याद बहुत–2 स्वीकार करना जी।" पार्टियों को रिम–झिम में बम्बई, अमृतसर शोभित हो रही है। अच्छा विदाई।